सांध्य दैनिक 4PM

कठिन समय में भी अपने लक्ष्य को मत छोड़िए और विपत्ति को अवसर में बदलिए।

-धीरूभाई अंबानी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 10 ● अंक: 140 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 25 जून, 2024

रोहित के तुफान में उड़े... 7 | ओडिशा में नवीन की जगह अब... 3 | भाजपा की सरकारों में हमेशा... 2

लोकसभा अध्यक्ष पर सरकार और विपक्ष में आर-पार

देश में पहली बार होगा स्पीकर का चुनाव

सत्ता और विपक्ष में नहीं बनी सहमति

ओम बिरला और के. सुरेश के बीच होगा मुकाबला

» डिप्टी स्पीकर की मांग पर अड़ा विपक्ष

» राहुल बोले- मोदी कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 18वीं लोकसभा का पहला सत्र चल रहा है। 24 जून से शुरू हुए इस सत्र में पहले और दूसरे दिन नवनिर्वाचित सांसदों द्वारा लोकसभा सदस्य की शपथ ली जा रही है। इस दौरान लोकसभा अध्यक्ष के पद को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सियासत गरमा गई है। पहले सत्र के दूसरे दिन लोकसभा अध्यक्ष के पद को लेकर सरकार और विपक्ष दोनों के बीच हाई वोल्टेज सियासत देखने को मिली और अंततः दोनों के बीच तलवारें खिंच गईं। जिसके बाद अब भारत के इतिहास में पहली बार लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव होने जा रहा है। लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव कल यानी 26 जून को होगा। सत्ता पक्ष एनडीए की ओर से ओम बिरला जबकि विपक्षी यानी इंडिया गठबंधन की ओर से 8 बार के सांसद और केरल कांग्रेस के नेता के. सुरेश ने स्पीकर पद के लिए नामांकन भर दिया है।

आज सुबह पहले ऐसी खबरें आई कि विपक्ष और सरकार के बीच स्पीकर पद को लेकर सहमति बन गई है और विपक्ष अपना कोई उम्मीदवार नहीं उतारेगा। लेकिन अचानक ही विपक्ष ने अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया। दरअसल, विपक्ष की मांग डिप्टी स्पीकर पद की थी, जिसे लेकर वो अड़ गया। विपक्ष ने पहले ही कहा था कि अगर डिप्टी स्पीकर का पद नहीं मिलता है तो वो भी स्पीकर पद के लिए अपना उम्मीदवार खड़ा करेंगे।

खरगे से तीन बार हुई बात : राजनाथ

राजनाथ सिंह ने राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि मल्लिकार्जुन खरगे एक वरिष्ठ नेता हैं और मैं उनका सम्मान करता हूं। कल से मेरी उनसे तीन बार बातचीत हो चुकी है।

अध्यक्ष किसी पक्ष का नहीं पूरे सदन का होता है : पीयूष गोयल

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि पहले उपाध्यक्ष कौन होगा ये तय करें फिर अध्यक्ष के लिए समर्थन मिलेगा, इस प्रकार की राजनीति की हम निंदा करते हैं। स्पीकर किसी सत्तारूढ़ पार्टी या विपक्ष का नहीं होता है वो पूरे सदन का होता है, वैसे ही उपाध्यक्ष भी किसी पार्टी या दल का नहीं होता है पूरे सदन का होता है। किसी विशिष्ट पक्ष का ही उपाध्यक्ष हो ये लोकसभा की किसी परंपरा में नहीं है।

टीएमसी का आरोप- हमसे नहीं ली गई सलाह

कांग्रेस ने इंडिया गठबंधन की तरफ से स्पीकर पद के लिए के. सुरेश के नाम का ऐलान तो कर दिया है, लेकिन इसे लेकर इंडिया गठबंधन में एकराय बनती नहीं दिख रही है। टीएमसी का कहना है कि लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवार को मैदान में उतारने के बारे में टीएमसी से कोई सलाह नहीं ली गई। बयान दिए जाने से पहले इंडिया ब्लॉक के साथ कोई परामर्श नहीं किया गया और न ही कोई सामूहिक फैसला लिया गया है। टीएमसी ने अभी तक हस्ताक्षर नहीं किए हैं। वे ममता बनर्जी की मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं।

कल सुबह 11 बजे होगा चुनाव

ऐसे में अब बुधवार सुबह 11 बजे लोकसभा स्पीकर को लेकर चुनाव होगा। जिसमें ओम बिरला और के. सुरेश आमने-सामने होंगे। उसके बाद नतीजों का ऐलान किया जाएगा। अब तक लोकसभा स्पीकर को लेकर आम सहमति बनती रही है और विपक्षी दल से जुड़ा नेता अमूमन डिप्टी स्पीकर चुना जाता रहा है।

राजनाथ ने नहीं बैक की खरगे को कॉल : राहुल

शुरुआत में खबर थी कि लोकसभा स्पीकर को लेकर एनडीए और विपक्ष के बीच सहमति बन गई है और ओम बिरला एक बार फिर स्पीकर पद संभालेंगे। लेकिन संसद पहुंचने पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के बयान से सियासत गरमा गई। राहुल गांधी ने कहा कि विपक्ष के पास राजनाथ सिंह का कॉल आया था। उन्होंने कहा था कि स्पीकर पद पर विपक्ष को समर्थन करना चाहिए और एक राय बनानी चाहिए। हमने कहा कि हम स्पीकर का समर्थन करेंगे, लेकिन डिप्टी स्पीकर का पद विपक्ष को मिलना चाहिए। राजनाथ सिंह ने कहा था कि मल्लिकार्जुन खड़गे को कॉल बैक करेंगे। लेकिन वो कॉल अभी तक नहीं आया। पीएम मोदी विपक्ष से सहयोग मांग रहे हैं, लेकिन हमारे नेता का अपमान हो रहा है। मोदी कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

बीते 10 सालों में भारतीयों को हुआ अघोषित आपातकाल का एहसास : खरगे

इस पूरे घटनाक्रम पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि देश भविष्य की ओर देख रहा है, आप अपनी कमियां छिपाने के लिए अतीत को ही कुरेदते रहते हैं। बीते 10 सालों में 140 करोड़ भारतीयों को आपने जो अघोषित आपातकाल का आभास करवाया, उसने लोकतंत्र और संविधान को गहरा आघात पहुंचाया है। पार्टियों को तोड़ना, चोर दरवाजे से चुनी हुई सरकारों को गिरना, 95 फीसदी विपक्षी नेताओं पर ईडी, सीबीआई, आईटी का दुरुपयोग कर मुख्यमंत्रियों तक को जेल में डालना और चुनाव के पहले सत्ता का इस्तेमाल करके लेवल प्लेइंग फील्ड को बिगाड़ना- क्या ये अघोषित आपातकाल नहीं है? मोदी जी सहमति और सहयोग की बात करते हैं पर उनके एक्शन इसके विपरीत हैं।

भाजपा की सरकारों में हमेशा लीक हुए पेपर : अखिलेश

» बोले- बीजेपी ने करोड़ों परिवारों को दिया धोखा

» लोग अच्छे दिन का इंतजार करते-करते थक गए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। इस बार के लोकसभा चुनावों में 37 सीटें जीतकर समाजवादी पार्टी देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। ऐसे में संसद में इस बार सपाइयों की स्थिति काफी मजबूत है। यही कारण है कि सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी विधानसभा से इस्तीफा देकर लोकसभा जाना उचित समझा। अखिलेश यादव इस बार कन्नौज से लोकसभा पहुंचे है।

ऐसे में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनने के बाद और उत्तर प्रदेश में इतनी बड़ी जीत हासिल करने के बाद सपा प्रमुख काफी उत्साहित हैं। इस बीच 18वीं लोकसभा के पहले सत्र के दौरान अखिलेश यादव जब अपने सभी सांसदों के साथ लोकसभा पहुंचे तो काफी उत्साहित नजर आए। इस दौरान उन्होंने केंद्र की मोदी सरकार पर भी जमकर निशाना साधा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सभी 37 सांसदों के साथ तस्वीरें पोस्ट की हैं। कन्नौज से सांसद अखिलेश ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लेकर देश की जनता का पैगाम हम दिल्ली आए। बचाने संविधान।

नौजवानों को नौकरी न देना पड़े, इसलिए पेपर लीक करा रही बीजेपी

इससे पहले सपा प्रमुख ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार को कई मुद्दों पर घेरा। पेपर लीक पर केंद्र को घेरते हुए अखिलेश ने कहा कि भाजपा की सरकारों में हमेशा से पेपर लीक हुए हैं, जवानों को नौकरी न देनी पड़े इसलिए भाजपा पेपर लीक करा रही है। करोड़ों परिवारों के साथ भाजपा ने धोखा देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा का पुराना तरीका है अगर आप इतिहास देखें तो भाजपा की सरकारों में पेपर लीक हुए हैं। उत्तर प्रदेश में यह सबसे बड़ा सवाल निकलकर आया है। आप जानबूझकर पेपरलीक करा रहे हैं जिससे नौजवानों को नौकरी और उन्हें उनका आरक्षण न मिल जाए। जो बच्चों की मांग है वही होना चाहिए।

लड़खड़ाए सांसद, संभालने के लिए आगे आए अखिलेश यादव

18वीं लोकसभा के पहले दिन संसद में कुछ ऐसा हुआ जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। बिहार स्थित काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद राजा राम सिंह जब शपथ लेकर लौट रहे थे तभी वह सीढ़ियों से लड़खड़ाकर गिर पड़े। इस दौरान समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और कन्नौज से सांसद अखिलेश यादव उन्हें संभालने के लिए उठे। हालांकि, राजा राम सिंह तब तक संभल चुके थे। इस वक्त चेयर पर बीजेपी सांसद राधामोहन सिंह पीठासीन थे।

लोकतंत्र को बचाने के लिए जनता का आभार : सपा प्रमुख

इस दौरान स्पीकर की पोस्ट पर बात करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि हर फैसला समय पर होगा और आप सभी को उसकी जानकारी दे दी जाएगी। लोकसभा के नतीजों पर सपा प्रमुख ने कहा कि जनता का आभार है की उन्होंने लोकतंत्र को बचा लिया। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि सबसे पहले मैं देश की जनता को धन्यवाद देता हूं कि उसने संविधान और लोकतंत्र को बचाने के लिए वोट दिया। लोग अच्छे दिन का इंतजार करते-करते थक गए हैं, मुझे उम्मीद है कि आने वाले दिनों में खुशी के दिन आएंगे।

बीजेडी का बीजेपी से मोहभंग अब विपक्ष का देगी साथ

» पिछले दो कार्यकालों में बीजेडी भाजपा के साथ रहती थी खड़ी

» विधानसभा चुनावों में मिली हार के बाद बदला विचार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भुवनेश्वर। संसद में स्पीकर के चुनाव से पहले विपक्ष को एक और पार्टी का साथ मिल गया है। ओडिशा विधानसभा और लोकसभा में हार के बाद नवीन पटनायक की बीजू जनता दल ने कहा है कि वह विपक्ष का साथ देगी।

बता दें कि पीएम मोदी के पिछले दो कार्यकाल में बीजेडी संसद में बीजेपी के साथ खड़ी रहती थी। राज्यसभा में भी अगर किसी विधेयक को पास करने के लिए संख्याबल की कमी होती थी तो बीजेडी एनडीए का साथ देती थी। हालांकि, इस बार ओडिशा चुनाव में बीजेपी और बीजेडी का गठबंधन नहीं हो पाया। इसके बाद बीजेपी ने विधानसभा में भी नवीन पटनायक को मात दे दी।

नवीन पटनायक ने बैठक में लिया फैसला

नवीन पटनायक ने अपने 9 राज्यसभा सांसदों के साथ बैठक की। इसके बाद पार्टी की तरफ से जारी बयान में कहा गया, राज्य के विकास के लिए सभी मामले बीजेडी केंद्र सरकार के सामने रखेगी। अब तक बहुत सारी मांगें पूरी नहीं हो पाई हैं। हम लोग संसद में 4.5 करोड़ ओडिशा के लोगों की आवाज बनेंगे। बता दें कि बीते 10 साल में बीजेडी ने कई बार सरकार का बाहर से समर्थन किया है। एक बार बीजेपी की दिवंगत नेता सुषमा स्वराज ने कहा था कि बीजेपी के अलग होने का पछतावा एक दिन नवीन पटनायक को जरूर होगा।

सरकार का नहीं अब विपक्ष का देंगे साथ : बीजेडी

बीजेडी नेता सस्मित पात्रा ने कहा कि नवीन पटनायक ने साफ निर्देश दिया है कि राज्य के लोगों के हित में लड़ाई लड़ी जाए। बीजेपी को अब समर्थन नहीं मिलेगा। केवल विपक्ष का साथ दिया जाएगा। बता दें कि चुनाव में बीजेडी इंडिया गठबंधन के समर्थन में भी नहीं थी। जब नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन का संयोजन कर रहे थे तो उन्होंने नवीन पटनायक से मुलाकात की थी। हालांकि उन्होंने कोई वादा नहीं किया था।

उद्धव गुट ने उठाई मकानों में मराठाओं के लिए 50 फीसदी आरक्षण की मांग

» विधान परिषद में प्राइवेट मेंबर बिल लाने की तैयारी में शिवसेना यूबीटी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। लोकसभा चुनाव में अच्छे नतीजों से उत्साहित शिवसेना (यूबीटी) ने अब विधानसभा के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। यही नहीं उद्धव ठाकरे गुट अब चुनाव में मराठा कार्ड चलना चाहता है। उसने विधान परिषद में प्राइवेट मेंबर बिल पेश करने का फैसला लिया है, जिसमें मुंबई में बनने वाली नई इमारतों में मराठियों के लिए 50 फीसदी कोटा तय करने की मांग की जाएगी।

सदन में बिल पेश करने के लिए फिलहाल डिप्टी चेयरपर्सन से मंजूरी का इंतजार है। बिल में मांग उठाई गई है कि यदि नई बनी सोसायटी में 50 फीसदी मराठा कोटे की शर्त को पूरा नहीं किया जाता है तो फिर बिल्डर पर 10 लाख रुपये तक का फाइन लगे या फिर 6 महीने की कैद की सजा का प्रावधान हो।

खानपान और धर्म के नाम पर होने वाला भेदभाव असंवैधानिक

विधान परिषद में प्राइवेट मेंबर बिल उद्धव गुट के नेता अनिल परब लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे तमाम मामले आए हैं, जब मराठी भाषी लोगों को उनकी पहचान और खानपान के आधार पर मकान ही नहीं दिए गए। ऐसी स्थिति चिंताजनक है। ऐसे में हमारी मांग है कि नई बनने वाली सोसायटियों में मराठा समुदाय के लोगों के लिए आरक्षण ही कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि खानपान और धर्म के नाम पर होने वाला किसी भी तरह का भेदभाव असंवैधानिक है। उन्होंने विले पार्ले की एक सोसायटी का एक जिक्र करते हुए कहा कि बिल्डर ने मराठी लोगों को घर देने से मना कर दिया। इसके लिए उसने मराठी लोगों के खानपान का तर्क दिया था। उन्होंने कहा कि मराठी लोगों ने इसका विरोध भी किया था। लेकिन किसी ने भी इसका संज्ञान नहीं लिया और सरकार ने भी चुप्पी साध ली। इस पर जब मीडिया में मामला उछला तो बिल्डर ने माफी मांगी।

ममता ने मंत्रियों व नौकरशाहों को लगाई फटकार

» बोलीं- क्या आप मुझसे सड़कों पर झाड़ू लगाने की उम्मीद करते हैं

» प्रदेश में निम्न स्तर की जन सुविधाओं को लेकर सीएम की बैठक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रदेश में एक्शन में नजर आ रही हैं। राज्य में निम्न स्तर की जन सुविधाओं को लेकर सीएम ममता बनर्जी ने विधायकों, नौकरशाहों और पुलिस अधिकारियों को फटकार लगाई। उन्होंने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल में लगभग हर जगह नागरिक सुविधाएं खत्म हो गई हैं।

मुख्यमंत्री ने मंत्रियों, विधायकों और नौकरशाहों से सवाल किया कि क्या आप मुझसे राज्य की सड़कों पर झाड़ू लगाने की उम्मीद करते हैं? राज्य सचिवालय में अलग-अलग नागरिक निकायों के कार्यों की समीक्षा करने के लिए बैठक का आयोजन किया गया था। नाराज मुख्यमंत्री ने इस दौरान एक मंत्री, एक पूर्व महापौर और कुछ नौकरशाहों को उनके दोयम दर्जे के कार्यों के लिए फटकार लगाई।

एक टीम करेगी नगर निकाय के अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा

इस दौरान ममता बनर्जी ने कहा कि क्या मुझे अब सड़कों पर झाड़ू लगाने के लिए उतरना होगा? आपको आसमान की ओर नहीं बल्कि नीचे भी देखना होगा। किसी ने भी सड़कों और स्ट्रीट लाइटों की स्थिति पर गौर नहीं किया। पुलिस और नागरिक प्रशासन दोनों कुछ नहीं कर रहे। तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ने एलान किया कि नगर निकाय के अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा एक टीम द्वारा की जाएगी। इस टीम में सतर्कता विभाग के अधिकारी, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था), एक अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, सीआईडी के अधिकारी और निदेशक शामिल होंगे।

मुझे जबरन वसूली करने वाले अधिकारी नहीं, सेवक चाहिए : सीएम

ममता बनर्जी ने बैठक में कहा कि सरकार कुछ व्यक्तियों के कार्यों के लिए बदनामी नहीं झेलेगी। मुझे जबरन वसूली करने वाले अधिकारी नहीं बल्कि जनता के सेवक चाहिए। अगर जिम्मेदार अधिकारी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकते, तो उन्हें अपना पद छोड़कर चले जाना चाहिए। ममता बनर्जी ने चेतावनी दी कि आने वाले दिनों में केवल उन लोगों को चुनाव लड़ने के लिए टिकट मिलेगा, जो लोगों के लिए काम करेंगे। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने अग्निशमन और आपातकालीन सेवा मंत्री सुजीत बोस को कोलकाता के पास राजारहाट इलाके में अतिक्रमण के लिए जिम्मेदार ठहराया। इसके अलावा उन्होंने हावड़ा के पूर्व मेयर रथिन चक्रवर्ती पर भी लापरवाही का आरोप लगाया था। बनर्जी ने उप-विभागीय अधिकारी अमृता रॉय बर्मन पर बल्ली नगर पालिका की उपेक्षा करने का भी आरोप लगाया।

जेपी नड्डा बने राज्यसभा में नेता सदन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को राज्यसभा में सदन के नेता होंगे। वह राज्यसभा में पीयूष गोयल की जगह लेंगे। हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में गोयल महाराष्ट्र से निर्वाचित हुए हैं। नड्डा के पास केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और उर्वरक व रसायन मंत्रालय का जिम्मा भी है। राज्यसभा की वेबसाइट पर भी नड्डा का नाम बतौर सदन का नेता अपडेट किया गया है।

कांग्रेस ने नड्डा को राज्यसभा में सदन का नेता नामित किए जाने पर उन्हें बधाई दी और कहा कि यदि सदन के नेता सभी को समायोजित करेंगे तो विपक्ष सहयोग करेगा। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि जेपी नड्डा जी को राज्यसभा में सदन के नेता के रूप में नामित किए जाने पर बधाई। जैसा कि वेंकैया नायडू (पूर्व उपराष्ट्रपति एवं उच्च सदन के पूर्व सभापति) ने कहा था - यदि सदन के नेता समायोजित कर सकते हैं, तो विपक्ष सहयोग कर सकता है।

ओडिशा में नवीन की जगह अब कौन!

19 साल तक सीएम रहे पटनायक अब विपक्ष में

- बीजेपी ने विस चुनाव में बीजद को सत्ता से किया बाहर
- नई लीडरशिप पर ध्यान लगाएगा बीजू जनता दल
- 24 साल पहले पटनायक ने लिखा था इतिहास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ज्योति बसु के बाद नवीन पटनायक ऐसे मुख्यमंत्री रहे जो किसी राज्य के सबसे ज्यादा कार्यकाल तक सत्ता की बागडोर संभालने वाले नेता बने। हालांकि 23 साल सत्ता संभलने के बाद ज्योति बसु ने स्वास्थ्य कारणों से मार्क्सवादी सरकार से इस्तीफा देकर पश्चिम बंगाल की कमान बुद्धदेब भट्टाचार्य को सौंप दी थी। पर ओडिशा के सीएम नवीन पटनायक 19 साल वहां के सर्वेसर्वा रहे है। 2024 में उनकी बीजद सरकार को बीजेपी से सत्ता से बाहर कर दिया।

इन दोनों पूर्वी राज्यों ने पूरे देश की राजनीति में नई धारा को अकेले दम पर बहाया है। हालांकि नवीन बाबू ओडिशा में विपक्ष के नेता बन गए हैं। इस बार भी दोनों राज्यों (पश्चिम बंगाल व ओडिशा) राजनीति ने देश में नया रंग दिखाया वैसे भी इतिहास हमेशा विजेता का ही है। इस लिहाज से देखें तो आज के उड़ीसा का इतिहास बीजेपी का है। लेकिन सवाल यह है कि नवीन पटनायक ने गलती कहां की? नवीन पटनायक ने विवाह नहीं किया है। उनके पिता बीजू पटनायक पहले कांग्रेस में थे, बाद के दौर में वे जनता परिवार की अहम हस्ती रहे।

साल 2000... संसद का बजट सत्र चल रहा था, मार्च के पहले हफ्ते का कोई दिन था, लोकसभा में मंत्रियों वाली सीट की ओर एक सांसद धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उस शख्स को देख लोकसभा की प्रेस गैलरी में हलचल मच गई, इस हलचल पर नीचे बैठे कुछ सांसदों की निगाह पड़ी, उनकी भी निगाह उसी ओर चली गई, जिधर रिपोर्टर देख रहे थे। इस बीच तत्कालीन सत्ताधारी गठबंधन के सांसदों की हथेलियां मेजों को थपथपाने लगीं। देखते ही देखते इस हथेली कोरस में समूचे सदन की हथेलियां जुड़ गईं। क्या सत्ता पक्ष, क्या विपक्ष, हर सांसद की थपेली जैसे एक लय में मेजों को थपथपाने लगीं थी। इस कोरस में शामिल नहीं था, तो संसद के कर्मचारी और अधिकारी, जिन्हें नियम-कानून इसकी अनुमति नहीं देते। सांसदों के इस अभूतपूर्व स्वागत से उस शख्सियत का अभिभूत होना स्वाभाविक था, इस औचक घटना के बाद वह व्यक्ति विनम्रता से और भर उठा, वह शख्सियत थे वाजपेयी सरकार के इस्पात मंत्री नवीन पटनायक। फरवरी 2000 में हुए उड़ीसा विधानसभा चुनाव में उनकी अगुआई में बीजू जनता दल ने 117 सदस्यीय विधानसभा में 68 सीटें जीत कर कांग्रेस के गढ़ को ध्वस्त कर दिया। अपने अस्तित्व के बाद बीजू जनता दल का वह पहला विधानसभा चुनाव था, जिसमें उसकी सहयोगी भारतीय जनता पार्टी थी, जिसने 38 सीटें जीती थीं, तब उड़ीसा में नया इतिहास रचा गया।

बीजू पटनायक के इकलौते इंजीनियर बेटे के तूफान में उड़ी थी कांग्रेस

राज्य के कद्दावर नेता रहे बीजू पटनायक के इकलौते इंजीनियर बेटे के तूफान में बंगाल की खाड़ी के किनारे की धरती से कांग्रेस उड़ गई। तब नया इतिहास रचा गया था। उस जीत के नायक का लोकसभा में सम्मान के लिए अगर उस कांग्रेस के सांसदों को भी मजबूर होना पड़ा था, उसकी वजह सिर्फ जीत नहीं, बल्कि उस शख्स की सादगी और विनम्रता रही। यह विनम्रता विगत 13 जून को भी भुवनेश्वर में नए मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में भी दिखी, जब भूतपूर्व शासक के रूप में नवीन पटनायक शपथ मंच पर पहुंचे। इसे संयोग कहें या कुछ और कि जिस बीजेपी की बैसाखी के सहारे नवीन पटनायक ने उड़ीसा में नया इतिहास रचा, उसी बीजेपी ने ठीक 24 साल बाद नवीन पटनायक को भूतपूर्व बना दिया। अठारहवीं लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में मिले सदमे से जब बीजेपी जूझ रही थी, उसी वक्त उड़ीसा ने पार्टी को सांत्वना देने का काम किया। राज्य की 21 लोकसभा सीटों में बीस पर एकतरफा जीत हासिल करके राज्य को एक तरह से कांग्रेस मुक्त बना दिया। विपक्ष को मिली इकलौती सीट नवीन पटनायक को मिली।

आखिरी कार्यकाल में हो गईं गलतियां

लेकिन अपने आखिरी कार्यकाल में उन्होंने गलतियां शुरू की। तमिलनाडु मूल के आईएएस अधिकारी वीके पांडियन उनके करीबी बनकर उभरे। विधानसभा चुनावों के ठीक पहले पांडियन ने इस्तीफा दे दिया और बीजू जनता दल में नवीन के अघोषित उत्तराधिकारी के रूप में उभरते चले गए। उन्होंने चुनाव अभियान में खूब मेहनत की। उड़ीसा में यहां तक माना जाने लगा था कि आने वाले दिनों में अगर बीजू जनता दल को जीत मिलती है तो नवीन सिर्फ नाम मात्र के मुख्यमंत्री होंगे और पांडियन असली मुख्यमंत्री होंगे। जिस उड़ीसा के लोग पूरे देश में रोजगार और पढ़ाई के लिए फैले हुए हैं, जहां के सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की तूती अमेरिका के सिलिकॉन वैली तक में बोलती है, उसी उड़ीसा के लोगों का अपना स्वाभिमान जाग उठा। उन्हें नवीन पटनायक तो पसंद रहे, लेकिन उनके उत्तराधिकारी के रूप में वी के पांडियन पसंद नहीं रहे। उड़िया बनाम बाहरी का नारा लगा और भारतीय जनता पार्टी ने इसे जन नारा बना दिया। इसका असर यह हुआ कि बीजेपी ने उस नवीन पटनायक को किनारे लगा दिया, जिन्होंने कभी उसका हाथ झटककर उसे किनारे लगा दिया था।

स्वास्थ्य ने भी नहीं दिया साथ

नवीन पटनायक 77 साल के हो गए हैं। उनका स्वास्थ्य भी साथ नहीं देता। राज्य में यह भी माना जाने लगा कि उनके स्वास्थ्य की ठीक से देखभाल नहीं की गई। दबी जुबान से यह भी कहा जाता रहा कि उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली दवाएं दी गईं। बीजेपी ने तो अपने चुनाव अभियान में वादा तक किया कि अगर वह सत्ता में आती है तो वह नवीन बाबू के स्वास्थ्य की उच्चस्तरीय जांच कराएगी। इससे पांडियन को लेकर रोष बढ़ा। जिसका नतीजा बीजू जनता दल की सत्ता से विदाई के रूप में सामने है। अगर नवीन पटनायक ने अपने ही दल से अपना कोई उत्तराधिकारी चुना होता, दूसरी पंक्ति का नेतृत्व उभारने की पुरानी तैयारी किए होते तो शायद चुनावी नतीजे उनके लिए इतने खराब नहीं होते। सत्ता से बीजू जनता दल के बाहर होने के बाद माना जा रहा था कि राज्य में नेता प्रतिपक्ष का पद नवीन पटनायक वी के पांडियन को दे सकते हैं। हालांकि पांडियन ने बीजू जनता दल की हार के चलते राजनीति से संन्यास का ऐलान कर दिया है। ऐसे में लग रहा था कि नवीन पटनायक नेता प्रतिपक्ष का पद किसी और को भी दे सकते हैं। लेकिन उन्होंने राजनीतिक पर्यवेक्षकों को चौंकाते हुए खुद को विधानसभा में विरोधी दल का नेता घोषित कर दिया है।

पांडियन का दंश मार गया डंक

वी के पांडियन की पत्नी भी उड़ीसा में आईएएस अफसर हैं। सुजाता कार्तिकेयन और पांडियन की जोड़ी पिछले पांच साल में सबसे ज्यादा प्रभावी हुई। उड़ीसा ऐसा राज्य है, जहां कम पढ़े लिखे, और कई बार अनपढ़ आदिवासी आबादी के साथ ही सवर्ण और पढ़े-लिखे प्रभावी लोगों का बेहतर अनुपात है। आदिवासी समुदाय में चर्चों का प्रभाव है। चर्च के प्रभाव को रोकने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद यहां गहरे तक सक्रिय है। संघ विचार परिवार के मजबूत सांगठनिक पहुंच और पकड़ के चलते देखते ही देखते बीजेपी ने भी गांव-गांव तक अपनी पैठ बना ली। नवीन पटनायक की चूंकि उम्र बढ़ रही है और वे शादीशुदा नहीं है। लिहाजा मौजूदा चलन के मुताबिक, उनकी विरासत को बढ़ाने के लिए उनके परिवार में कोई रहा नहीं। बीजू जनता दल का संगठन भारतीय जनता पार्टी की तरह नहीं रहा, लिहाजा वहां दूसरी पंक्ति का नेतृत्व उभर नहीं पाया। पांडियन

और उनकी बढ़ती दखलंदाजी और प्रभाव के चलते बीजू जनता दल के कद्दावर नेता अलग होते चले गए। उनमें से ज्यादातर ने भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया। इस बीच बीजेपी ने आदिवासी समुदाय में अपनी पैठ बनाई। आदिवासी समुदाय की द्रौपदी मुर्मू को देश के सर्वोच्च पद पर विराजमान कराया। चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आता गया, बीजेपी ने स्थानीय बनाम बाहरी के मुद्दे को खूब उछाला। हालांकि शुरूआत में ऐसा नहीं लग रहा था कि नवीन पटनायक को बड़ी चुनौती मिल सकेगी। बड़े से बड़े राजनीतिक पर्यवेक्षक यही मान रहे थे कि बहुत होगा तो लोकसभा में बीजेपी की सीटें बढ़ जाएगी। विधानसभा में भी बीजेपी की ताकत बढ़ेगी, लेकिन राज्य की सत्ता नवीन बाबू के ही हाथ रहेगी। लेकिन स्थानीय बनाम बाहरी के मुद्दे के साथ ही बीजू जनता दल के नेताओं के पलायन से उड़ीसा में संदेश गया कि अगर नवीन बाबू को जीत मिलती भी है तो उनके हाथ सत्ता नही रहेगी। उन पर शासन करने वाला उनका अपना नहीं, तमिलनाडु का नेता होगा। बीजेपी ने चुनाव अभियान में इसे बार-बार उछाला।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

जल संचय के प्रति होना होगा गंभीर

> सरकारी स्तर क अलावा सामाजिक स्तर पर अब चेतने की जरूरत हैं वर्षा जल का संचयन तेजी से किया जाए ताकि आने वाले भविष्य में पानी का संकट जानलेवा न हो। इन दिनों दुनिया में पेयजल की समस्या दिनों दिन गहराती चली जा रही है। इसके बावजूद हम पेयजल को बचाने और जल संचय के प्रति अपेक्षा अनुरूप गंभीर नहीं हैं।

धीरे-धीरे मानसून आना शुरू हो गया है। हजारों लीटर बारिश का पानी नालियों व नदियों के रास्ते बहकर बेकार हो जाएगा। बाढ़ से शहर-शहर डुबे नजर आएंगे। शोर मचेगा कि बर्षा से पानी-पानी हो गए शहर। पर यहां पर सोचने वाली बात यह है कि कोई आम हो या खास इस बर्बाद होते पानी को संरक्षित करने की नहीं सोचेगा। जबकि भारत जैसे देश में गर्मी के दिनों में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हे जिसने पानी की कमी की वजह से परेशानी न झेली हो। कुल मिलाकर रोने धोने से कोई लाभ नही है। सरकारी स्तर के अलावा सामाजिक स्तर पर अब चेतने की जरूरत हैं वर्षा जल का संचयन तेजी से किया जाए ताकि आने वाले भविष्य में पानी का संकट जानलेवा न हो। इन दिनों दुनिया में पेयजल की समस्या दिनों दिन गहराती चली जा रही है। इसके बावजूद हम पेयजल को बचाने और जल संचय के प्रति अपेक्षा अनुरूप गंभीर नहीं हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि 2025 में दुनिया की चौदह फीसदी आबादी के लिए जल संकट बहुत बड़ी समस्या बन जायेगा। इंटरनेशनल ग्राउंड वॉटर रिसोर्स असेसमेंट सेंटर के अनुसार पूरी दुनिया में आज 270 करोड़ लोग ऐसे हैं जो एक वर्ष में तकरीबन तीस दिन तक पानी के संकट का सामना करते हैं। संयुक्त राष्ट्र की मानें तो अगले तीन दशक में पानी का उपभोग यदि एक फीसदी की दर से भी बढ़ेगा, तो दुनिया को बड़े जल संकट से जूझना पड़ेगा। जगजाहिर है कि जल का हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष तथा परोक्ष प्रभाव पड़ता है। यह भी कि जल संकट से एक ओर कृषि उत्पादकता प्रभावित हो रही है, दूसरी ओर जैव विविधता, खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य पर भी खतरा बढ़ता जा रहा है। विश्व बैंक का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के चलते पैदा हो रहे जल संकट से 2050 तक वैश्विक जीडीपी को छह फीसद का नुकसान उठाना पड़ेगा। दुनिया में दो अरब लोगों को यानी 26 फीसदी आबादी को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। पूरी दुनिया में 43.6 करोड़ और भारत में ख्13.38 करोड़ बच्चों के पास हर दिन की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है। यूनीसेफ की रिपोर्ट कहती है कि 2050 तक भारत में मौजूद जल का 40 फीसदी हिस्सा खत्म हो चुका होगा। एशिया की 80 फीसदी आबादी खासकर पूर्वोत्तर चीन, पाकिस्तान और भारत इस संकट का भीषण सामना कर रहे हैं। आशंका है कि भारत इसमें सर्वाधिक प्रभावित देश होगा। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार शुद्ध पेयजल से जूझने वाली वैश्विक शहरी आबादी 2016 के 93.3 करोड़ से बढ़कर 2050 में 1.7 से 2.4 अरब होने की आशंका है। ग्लोबल कमीशन ऑन इकोनॉमिक्स ऑफ वॉटर की रिपोर्ट कहती है कि साल 2070 तक 70 करोड़ लोग जल आपदाओं के कारण विस्थापित होने को विवश होंगे। अब ऐसे में सभी लोगों की जिम्मेदारी है पानी बर्बादी को रोके और अपने भविष्य को संवारें।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

विदेश नीति में दुविधा व संशय के निहितार्थ

ज्योति मल्होत्रा

हालिया चुनावी परिणामों से, राजनीति पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की और हिंदुत्व के गढ़ के ऊपर भाजपा की मजबूत पकड़ ढीली पड़ी है और परेशानी बढ़ी है। 18वीं लोकसभा के आगामी मानसून सत्र की दृश्यावली अवश्य ही भविष्य का मंजर प्रस्तुत करेगी। लेकिन एक बड़ा खेल जो शेष दुनिया में चल रहा है, जिसमें अमेरिका, रूस, चीन मुख्य ध्रुव हैं, यह देखना रोचक होगा कि ये देश अशांत क्षेत्र में स्थिरीकरण शक्ति की हैसियत रखने वाले भारतीय दावे को किस तरह लेंगे। प्रथम चीज सर्वप्रथम, गत सप्ताह के शुरू में, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार 79 वर्षीय अजीत डोभाल की-इस शक्तिशाली पद पर विराजमान, खुफिया विभाग के पूर्व मुखिया और अब तीसरी बार राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार- नई दिल्ली में अपने अमेरिकी समकक्ष जैक सुलिवन से भेंटवार्ता हुई, जिसका एक मुख्य उद्देश्य अमेरिका से भारत को महत्वपूर्ण तकनीकों के हस्तांतरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना था।

इस मुलाकात का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता से पहले, डोभाल और सुलिवन बगैर सहायकों व कमरे में किसी और की मौजूदगी रखे बिना मिले और यह बैठक कम-से-कम 30-40 मिनट चली। अवश्य ही किसी टेबल लैंप के बेस में या कीमती कलाकृति के पीछे रिकॉर्डिंग उपकरण छिपाया रहा होगा – जेम्स बॉन्ड की फिल्मों के शौकीन अब इतना तो जानते ही हैं- और दोनों ने ही बाद में अपने-अपने अधिकारियों से निजी वार्ता के मुख्य बिंदु साझा किए होंगे। परंतु यहां गलती न करें। बाकी मुलाकातें चाहे कितनी भी अहम रही हों जैसे कि आईसीईटी जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों को लेकर या प्रधानमंत्री-सुलिवन भेंट या फिर विदेश मंत्री एस जयशंकर और सुलिवन के बीच 'चाय पर चर्चा', कोई भी डोभाल-सुलिवन के मध्य निजी बातचीत जितनी महत्वपूर्ण नहीं थी (गौरतलब है कि इस बीच अमेरिका के उप-विदेशमंत्री कर्ट कैम्पबेल, जो कि चीन के मामले में अमेरिका के शीर्ष कूटनीतिज्ञ हैं, वे भी दिल्ली में थे)।

और इसीलिए शेष तमाम विवरण नेपथ्य में चला गया- इसमें दिल्ली में शानदार सजावट वाला हैदराबाद हाउस, जो कि उच्चतम स्तर की तमाम राजनयिक वार्ताओं के लिए मुलाकात-स्थल है, वहां दिया आधिकारिक भोज भी शामिल है – यह शिष्टाचार निभाने

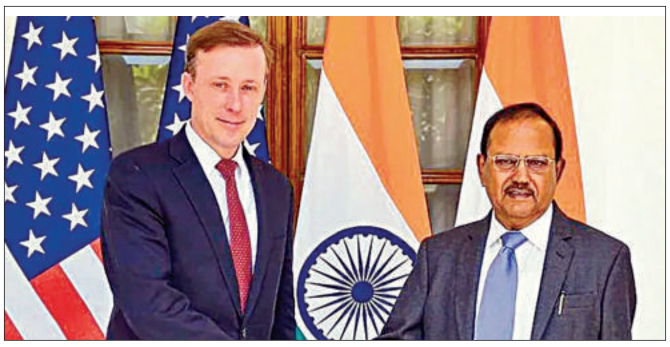

के साथ अपने रुख पर दृढ़ रहने के उद्देश्य से भी है। अवश्य ही बातचीत का एक विषय न्यूयॉर्क वासी और खालिस्तान के पैरोकार गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या के प्रयास में भारत की कथित संलिप्तता के इर्द-गिर्द रहा होगा। न्यायालय में दाखिल अमेरिकी अभियोजन के अनुसार, एक भारतीय नागरिक निखिल गुप्ता- जिसका चेक रिपब्लिक से अमेरिका को प्रत्यावर्तन ठीक उसी दिन हुआ जब नई दिल्ली में डोभाल-सुलिवन वार्ता जारी थी- उसको कथित तौर पर 'सीसी-1' नामक एक सह-साजिशकर्ता ने पन्नू को मरवाने का काम सौंपा। 'वाशिंगटन पोस्ट' ने अपने हालिया रहस्योद्घाटन में उसकी पहचान बताई है, जो कि भारत की विदेशों में गुप्तचर एजेंसी 'रॉ' में एक अधिकारी है। अब तक हमें यही सब पता है। हम यह भी जानते हैं कि जिस वक्त मामले की परतें खुल रही थी, भारतीयों ने अमेरिकियों को शांत करने के प्रयास किए, जिसके तहत उसके मूल कैडर में तबादला कर दिया गया। माना जाता है कि वह देश में लौट चुका है और मक्खियों और भावी-माओवादी, दोनों पर, घात लगाकर कार्रवाई के काम में व्यस्त होगा। पन्नू को मारने का यह कथित काम आज से ठीक एक साल पहले यानी 22 जून को अंजाम दिया जाना था -बेशक अमेरिकी एजेंटों ने इसे नाकामयाब कर दिया, तभी तो पन्नू आज भी जिंदा है, और शायद न्यूयॉर्क स्थित अपने घर में 'बैजल-एंड-चीज' या फिर आलू के पराठों का आनंद ले रहा होगा। हालिया लोकसभा चुनाव में वह लोगों को पंजाबी में दिए अपने वॉयस-मैसेज में आह्वान कर रहा था कि वे अमृतपाल सिंह जैसे कट्टरपंथियों को जिताएं, भले ही वह खडूर साहिब सीट जीत भी गया, लेकिन इसके पीछे बड़ी वजह है पंजाब का 'दिल्ली' के प्रति स्थाई गुस्सा न कि पन्नू के पृथकतावादी संदेशों से बना भावावेश।

भावार्थ यह कि पन्नू जिंदा हो या मुर्दा, वह अप्रासंगिक है। इस मुद्दे पर सुलिवन और डोभाल ने अपने हिसाब से इस विषय को निपटाया होगा, डोभाल माफी मांगने वालों में नहीं हैं- अपने आत्मसम्मान का ख्याल रखने वाला कोई भी खुफिया अधिकारी ऐसा कभी नहीं करना चाहेगा, और फिर वे क्षमायाचना करें भी किसलिए – लेकिन सभी पक्षों को मालूम है कि उच्च दांवों वाले इस खेल में सभी मुल्क एक-दूसरे की अक्ल, ताकत और कूवत को नापते हैं, जो कि आज भारत का हाथ कुछ हल्का है। लेकिन भारतीयों का इतिहास इस बारे में लंबा है।

व्यवस्था की खामियां दूर करने से टलेंगे हादसे

सरबजीत अरजन सिंह

पिछले साल बालासोर, ओडिशा में 3 रेलगाड़ियों की टक्कर हुई, जिसमें 296 यात्रियों की मृत्यु हुई और 1000 से अधिक घायल हुए। इसके पीछे वजह मानवीय चूक बताई गई। उम्मीद थी कि यह हादसा रेलवे को अपनी संचालन और रख-रखाव की प्रणाली की समीक्षा करके सुरक्षा में आगे सुधार लाने का निमित्त बनेगा, विशेषकर मानवीय चूक से होने वाली दुर्घटनाओं की संभावना न्यूनतम करने में, किंतु लगता है यह उम्मीद झूठी निकली। अब 17 जून को पश्चिम बंगाल में नई जलपाईगुड़ी के पास एक जगह ठहरी कंचनजंगा एक्सप्रेस को एक मालगाड़ी ने पीछे से आकर टक्कर मारी, जिसमें 10 लोगों की मौत हुई और 40 जख्मी हुए। इस दुर्घटना का दोष भी मानवीय चूक पर मढ़ दिया गया। हालांकि, रेलवे सुरक्षा आयुक्त द्वारा की जा रही वैधानिक जांच अभी जारी है, लेकिन सार्वजनिक मंचों पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर कुछ बिंदु जोड़कर, जो हुआ होगा, हम उसका अंदाजा लगा सकते हैं।

अब तक प्राप्त जानकारी के मुताबिक, 17 जून के दिन सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर रंगापानी और चैटरहाट स्टेशनों के बीच रेल-खंड में आसमानी बिजली गिरने से स्वचालित सिग्नल प्रणाली ठप्प पड़ गई, इसकी सूचना 6 बजकर 5 मिनट पर सिग्नल विभाग को प्रेषित कर दी गई। अब चूंकि निदान होने में वक्त लगना था तो सामान्य व सहायक नियमों के मुताबिक विभाग को पैदा हुई समस्या की घोषणा तुरंत कर देनी चाहिए थी, इससे होता यह कि कार्यप्रणाली का ढंग स्वचालित ब्लॉक सिग्नल व्यवस्था से बदलकर पूर्णरूपेण मानव-चालित व्यवस्था बन जाता, शायद तब हादसा टल जाता। फिलहाल अभी पता नहीं है कि ऐसा क्यों नहीं किया गया। नतीजतन, यह प्रखंड स्वचालित सिग्नल नियमों के मुताबिक काम करता रहा, जो ड्राइवरों को दोषपूर्ण सिग्नल पारित करने के लिए अधिकृत करता है। चूंकि स्वचालित क्षेत्रीय व्यवस्था लागू थी तो चालक के लिए गाड़ी की गति 15 किमी प्रतिघंटा तक सीमित रखना और प्रत्येक रेड सिग्नल पर 1 मिनट रुकना जरूरी था। कंचनजंगा एक्सप्रेस सहित 6 रेलगाड़ियों ने इस संहिता की पालना की भी, लेकिन कंटेनर ले जा रही मालगाड़ी के चालक ने ऐसा नहीं किया, जिससे दुर्घटना घटी।

यदि मालगाड़ी चालक ने भी उक्त निर्देशों का पालन किया होता तो टक्कर होने से बच जाती। साफ है, मालगाड़ी की रफ्तार 15 किमी प्रतिघंटा से कहीं अधिक थी। लोको ड्राइवरों के प्रवक्ता का कहना है कि 'पेपर लाइन क्लियर' (जिसमें इंजन चालक को अनुमति चिट थमाई जाती है) शायद जरूरी न थी क्योंकि चालक को सावधानी वाली गति बनाए रखते हुए सिग्नल पार करने का अधिकार होता है, चाहे वह खराब हो या न हो, वैसे भी स्वचालित सिग्नल प्रणाली का सारा प्रयोजन रेलगाड़ियों को, जितना संभव हो सके, अधिक से अधिक गाड़ियों को, उचित परस्पर नजदीकी दूरी कायम रखते हुए चलाना है। उनके अनुसार, पेपर लाइन क्लियर चिट यदि थमाई होती तो इसका सीधा अर्थ है ऐसी परिस्थिति जिसमें चालक के लिए संहिता का पालन करना जरूरी नहीं और वह सामान्य गति से आगे बढ़ सकता है।

लगता है, नई सिग्नल व्यवस्था के कार्यकारी-नियमों में यह एक असमंजसपूर्ण त्रुटि है (स्वचालित प्रणाली दो स्टेशनों के बीच एक वक्त में केवल एक ही रेलगाड़ी होने की अनुमति देने वाले कड़े ब्लॉक नियम के विपरीत है)। कर्मियों के विभिन्न स्तरों पर इन नियमों की यथेष्ट समझ न होना भी एक कारक हो सकता है। मानवीय चूक को वजह बताने वाले हादसों को रोकना इतना मुश्किल क्यों है? रेलवे द्वारा नई तकनीकें अपनाकर मानवीय दखलअंदाजी न्यूनतम करने के प्रयासों के बावजूद, मसलन, घरेलू तकनीक पर विकसित 'कवच' नामक रेल सुरक्षा प्रणाली- जो खतरे का सिग्नल पार करने के परिणामवश हुई दुर्घटनाओं को रोकने के लिए बनाई गई है- अभी भी हादसों की संख्या में मानवीय चूकों की हिस्सेदारी आधी है। यदि उक्त रेल-खंड में कवच व्यवस्था स्थापित की गई होती तो भले ही टक्कर होने से बच जाती लेकिन यह चालक को गलती करने से नहीं रोक पाती। तो आखिर क्या वजह है कि मानवीय चूक को खत्म कर पाना इतना मुश्किल है? वह इसलिए, क्योंकि यह असफलता का मुख्य कारक न होकर, व्यवस्था में गहरे तक समाई खामी का चिन्ह है। यह वह चीज है जिसकी स्वीकारोक्ति रेलवे विभाग द्वारा करना बाकी है। यह प्रवृत्ति मानवीय चूक को 'सड़े सेब' के नजरिए से देखती और मानती है कि चंद गैर-भरोसेमंद की काहिली के सिवाय सुरक्षा व्यवस्था मूलतः चाक-चौबंद है, ऐसों की शिनाख्त कर उन्हें मिसाल के तौर पर पेश किया जाए।

दुर्घटनाओं का ठीकरा मानवीय चूक के सिर फोड़ने के प्रसंगों की गिनती घटाने के लिए, रेलवे के शीर्ष कर्ताधर्ताओं को यह स्वीकार करना जरूरी है कि हादसे के जिम्मेवार लोगों की शिनाख्त करना जांच का निष्कर्ष न होकर आरंभिक बिंदु होना चाहिए। प्रबंधन को खुद से पूछना चाहिए कि कौन से ऐसे कारक हैं जो कर्मियों को सुरक्षा के बदले अन्य ध्येय चुनने का मौका बनाते हैं। और उनमें से कितने इनके अपने निर्णयों का परिणाम हो सकते हैं। आखिरकार, संगठन के प्रत्येक स्तर पर बैठे अधिकारियों को बहु-व्यवस्थात्मक ध्येयों को लेकर समझौते करने पड़ते हैं, जिनमें कुछ ऐसे होंगे जो रेल प्रचालन में प्रत्यक्ष रूप में शामिल लोगों पर बेजा जोर डालते होंगे।

इम्युनिटी बूस्टर है लहसुन, काली मिर्च और टमाटर से बना रसम

अगर आपको साउथ इंडियन खाना पसंद है तो आपको रसम भी जरूर भाता होगा। रसम वैसे तो कई तरीकों से बनाया जा सकता है लेकिन टमाटर लहसुन और काली मिर्च से बनाया जाने वाला रसम स्वाद में लाजवाब होता है। इससे स्वास्थ्य को भी कई लाभ मिलते हैं। इसे कई तरीकों से बनाया जाता है। जैसे कि इमली का रसम, नींबू का रसम, दाल का रसम और टमाटर का रसम। ये सारे रसम हमारे हेल्थ के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं। जिसमें से लहसुन, काली मिर्च, और टमाटर से बनने वाला रसम बदलते मौसम में होने वाले इन्फेक्शन से हमे बचाए रखता है। इसके सेवन से थकावट को दूर करने में मदद मिलती है। लहसुन और काली मिर्च के गुण इन्फेक्शन से लड़ने में मदद करते हैं, जबकि टमाटर विटामिन सी का अच्छा स्त्रोत है, जो इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है।

सामग्री

टमाटर की प्यूरी -1 कप, इमली का अर्क-1 एक बड़ा चम्मच, पिसी हुई काली-मिर्च एक चम्मच, लहसुन की कलियां -10 छिली हुई, राई- 2 चम्मच, तेल- 1 चम्मच, हल्दी पाउडर - 1 चम्मच, धनिया पाउडर- 1 चम्मच, धनिया पत्ती--2 बड़े चम्मच, करी पत्ता- 10-15 पत्तियां, हरी मिर्च- 2 बारीक कटी हुई, हींग- एक चुटकी, नमक- स्वादानुसार।

विधि

एक कढ़ाई में तेल डालकर इसके गर्म होने पर इसमें हींग,राई, का तड़का डालें राई के तड़कने पर इसमें टमाटर की प्यूरी और हल्दी और नमक को स्वादानुसार डालकर कुछ देर तक अच्छे से पकाएं । जब टमाटर का कच्चापन निकल जाए तो इसमें 4-5 कप पानी और इमली का अर्क मिलाएं और इसे अच्छे से उबालें दूसरी तरफ लहसुन और काली मिर्च को मोटा दरदरा सा पीस लें । अब उबलते हुए रसम में लहसुन और काली मिर्च को भी डाल दें। 5-7 मिनट बाद इसमें धनिया पाउडर डालकर कुछ देर और पकाएं और फिर दो मिनट बाद गैस बन्द कर दे और इसमें हरी धनिया पत्ती और थोड़ा सा घी डालकर इसे सर्व करें।

बच्चों के लिए बनाएं फ्रूट कस्टर्ड

स्कूल में गर्मी की छुट्टियां हो गई हैं अब कुछ समय तक बच्चे घर पर ही रहेंगे। ये जब स्कूल जाते हैं तो उनके खाने को लेकर ज्यादा परेशानी नहीं होती है, दिक्कत तब सामने आती है जब बच्चे घर पर रहते हैं। उस वक्त हर कोई चाहता है कि वो अपने बच्चे को उसकी पसंद की हर एक चीज खिलाए लेकिन इस दौरान उसकी सेहत का भी ध्यान रखना पड़ता है। खासतौर पर अब जब भीषण गर्मी पड़ने लगी है तो लोग ठंडी चीजें ही खाना और खिलाना पसंद करते हैं। तो इसके लिए फ्रूट कस्टर्ड एक बेहतर विकल्प है। फ्रूट कस्टर्ड एक ऐसा पकवान है जो खाने में स्वादिष्ट लगता है। ये गर्मी से भी राहत पहुंचाता है। अगर आप गर्मी के मौसम में ये अपने परिवारवालों और बच्चों को परोसेंगे तो वो इसे खाकर जरूर खुश होंगे।

सामग्री

दूध, अंगूर, अनार, केला, आम, 1/4 कप चीनी, कटे हुए काजू, बादाम, कस्टर्ड पाउडर।

विधि

फ्रूट कस्टर्ड बनाने के लिए सबसे पहले एक भगोने में दूध उबाल लें। जब तक दूध उबल रहा है तब तक एक कटोरी में थोड़ा सा दूध लेकर उसमें दो बड़े चम्मच कस्टर्ड पाउडर लेकर घोलें। ध्यान रखें कि इसे तब तक मिक्स करना है, जब तक इसमें पड़ीं गुठलियां पिघल न जाएं। अब उबले हुए दूध को एक नॉन स्टिक कड़ाही में पलट लें। अब इसमें चीनी डालकर चलाते रहें। जब चीनी घुलने लगे तो गैस बंद कर दें और फिर कस्टर्ड वाले घोल को इसमें डाल दें। अब इसे लगातार चलाएं और कुछ देर चलाने के बाद इसे गैस पर दोबारा रख दें। 5 मिनट के बाद जब ये गाढ़ा होने लगे तो गैस बंद करके इसे ठंडा होने दें। जब ये घोल ठंडा हो जाए तो इसमें सभी फलों को काटकर डाल दें। सबसे आखिर में ऊपर से बादाम और काजू भी काटकर डाल दें। अच्छे स्वाद के लिए इसे फ्रिज में रख दें और ठंडा-ठंडा ही परोसें।

हंसना मना है

संता- क्या हुआ क्यों उदास बैठे हो? बंता- कल एक न्यूज चैनल के एंकर ने कहा था आइए हम आपको गोवा लेकर चलते हैं। तभी से तैयार बैठा हूं ,कोई आया ही नहीं।

टीचर- चुनाव कितने चरणों में होता है? पप्पू- चुनाव केवल दो चरणों में होता है। टीचर-कैसे? पप्पू- चुनाव से पहले जनता के चरणों में.. चुनाव के बाद नेता के चरणों में..

भगवान- क्या चाहिए तुझे? भक्त- एक नौकरी, पैसो से भरा कमरा, सुकून की नींद और गर्मी से छुटकारा। भगवान- तथास्तु बेचारा भक्त अब बैंक के ATM का सिक्योरिटी गार्ड है, और वह AC में सोता रहता है!

बीवी बनाते समय भगवान ने कहा- अच्छी और समझदार बीवी हर कोने में मिलेगी और फिर दुनिया गोल बना दी, अब ढूंढ लो कोना?

प्रश्न- संस्कृत भाषा में पत्नी को क्या कहते हैं? उत्तर- गुरूजी संस्कृत तो छोड़िये, किसी भी भाषा में पत्नी को कुछ नहीं कह सकते, जान है तो जहांन है, भाषाएं तो ऊपरी ज्ञान है।

कहानी — राजा और मूर्ख बंदर

एक राजा के पास पालतु बंदर था। राजा उस बंदर पर बहुत विश्वास करता था, क्योंकि वह बंदर राजा का भक्त था। बंदर राजा की पूरे मन से सेवा करता था, लेकिन बंदर बिल्कुल मूर्ख था। उसे कोई भी काम ठीक से समझ नहीं आता था। राजा जब भी विश्राम करता बंदर उसकी सेवा के लिए हाजिर हो जाता था। उसके लिए हाथ पंखा चलाता था। एक दिन की बात है, जब राजा सो रहा था और बंदर उसके लिए पंखा झल रहा था, तभी एक मक्खी भिन भिनाते हुए राजा के ऊपर आकर बैठ जाती है। बंदर उस मक्खी को पंखे से बार-बार भागने की कोशिश करता है, लेकिन मक्खी उड़कर कभी राजा की छाती पर, कभी सिर पर, तो कभी जांघ पर जाकर बैठ जाती थी। मूर्ख बंदर काफी समय तक ऐसे ही मक्खी को भागने की कोशिश करता रहा, लेकिन मक्खी वहां से जाने का नाम ही नहीं ले रही थी। यह देखकर बंदर को क्रोध आ जाता है और वह पंखा छोड़कर तलवार निकाल लेता है। जब मक्खी राजा के माथे पर बैठती है, तो बंदर तलवार लेकर राजा की छाती पर चढ़ जाता है। यह देख कर राजा काफी डर जाता है। फिर मक्खी माथे से उड़ जाती है, तो बंदर उसे मारने के लिए हवा में तलवार चलाता है। इसके बाद मक्खी राजा के सिर पर जाकर बैठ जाती है, तो बंदर के तलवार से राजा के बाल कट जाते है और जब मूंछ पर बैठती है, तो मूंछ कट जाती है। यह देख राजा कमरे से जान बचाकर भागता है और बंदर तलवार लेकर उसके पीछे भागता है। इससे पूरे महल में उथल-पुथल मच जाती है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

मेहनत का फल मिलेगा। सामाजिक कार्य करने में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। कारोबार मनोनुकूल लाभ देगा। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से परिचय बढ़ेगा।

वृषभ

दूर से सुखद सूचना मिल सकती है। घर में मेहमानों का आगमन होगा। व्यय होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें।

मिथुन

नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति पर व्यय होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

कर्क

पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं।

सिंह

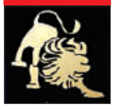

परिवार तथा मित्रों के साथ कोई मनोरंजक यात्रा का आयोजन हो सकता है। रुका हुआ पैसा मिलने का योग है। मित्रों के सहयोग से कार्य पूर्ण होंगे।

कन्या

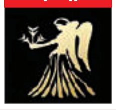

कार्यस्थल पर परिवर्तन संभव है। योजना फलीभूत होगी। कारोबार में वृद्धि पर विचार हो सकता है। नौकरी में अधिकारीगण प्रसन्न रहेंगे। मातहतों का सहयोग मिलेगा।

तुला

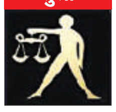

किसी धार्मिक स्थल की यात्रा की आयोजना हो सकती है। सत्संग का लाभ मिलेगा। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। घर-बाहर सुख-शांति रहेगी।

वृश्चिक

चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। लापरवाही न करें। किसी व्यक्ति से व्यर्थ विवाद हो सकता है। मानसिक क्लेश होगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

धनु

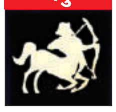

जल्दबाजी से काम बिगड़ेंगे तथा समस्या बढ़ सकती है। विरोध होगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। बाहर जाने की योजना बनेगी।

मकर

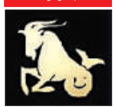

भूमि, भवन, दुकान, शोरूम व फैक्टरी इत्यादि की खरीद-फरोख्त हो सकती है। बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे।

कुम्भ

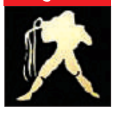

कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बन सकता है। कोई मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद प्राप्त होगा।

मीन

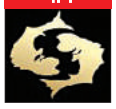

दूसरे से अधिक अपेक्षा करेंगे। जल्दबाजी से काम में बाधा उत्पन्न होगी। दौड़धूप अधिक रहेगी। बुरी सूचना मिल सकती है, धैर्य रखें। बनते कामों में देरी होगी।

चंदू चैम्पियन पर दर्शकों ने जमकर लुटाया प्यार

कार्तिक आर्यन स्टारर चंदू चैंपियन पॉजिटिव वर्ड ऑफ माउथ की वजह से अच्छा परफॉर्म कर रही है। साजिद नाडियाडवाला और कबीर खान द्वारा साथ प्रोड्यूस की गई यह फिल्म मुरलीकांत पेटकर की प्रेरणादायक कहानी है, जो दुनिया भर में मौजूद दर्शकों का दिल जीत रही है। फिल्म को ऑडियंस और क्रिटिक्स दोनों से बहुत प्यार और समर्थन मिल रहा है। इससे बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म करने में इसे मदद मिली है।

पहले वीकेंड पर शानदार परफॉर्म करने के बाद, फिल्म ने दूसरे वीकेंड में ऊंची छलांग मारते हुए शनिवार 6.30 करोड़ की कमाई की है। इस तरह से फिल्म ने 49.75 करोड़ की टोटल कमाई अपने नाम कर ली है और यह 50 करोड़ के क्लब मे शामिल होने से महज कुछ कदम दूर है। पहले दिन ओपनिंग करते हुए फिल्म ने शुक्रवार को 5.40 करोड़ की कमाई की जिसके बाद, दूसरे दिन शनिवार को 7.70 करोड़ का कलेक्शन करते हुए चंदू चैंपियन ने 45 फीसद की बढ़त दर्ज की। रविवार को तीसरे दिन 100 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़त के साथ फिल्म ने 11.01 करोड़ का कलेक्शन किया। लोगों की प्रशंसा, प्यार और पॉजिटिव वर्ड ऑफ माउथ ने फिल्म की परफॉर्मेंस को काफी हद तक बढ़ा दिया है, जिसकी वजह से फिल्म ने अपने चौथे दिन यानी सोमवार को 6.01 करोड़ की सॉलिड कमाई अपने नाम की। वीकेंड में अच्छी पकड़ बनाने के बाद फिल्म ने मंगलवार पांचवें दिन 3.6 करोड़, बुधवार छठे दिन 3.40 करोड़, गुरुवार सातवे दिन 3.01 करोड़, शुक्रवार आठवें दिन 3.32 करोड़ की कमाई की थी, जिसके बाद शनिवार नौवें दिन फिल्म ने 100 प्रतिशत की बढ़त दर्ज करते हुए 6.30 करोड़ की कमाई है। चंदू चैंपियन ने अपने दूसरे शनिवार को 6.30 करोड़ से ज्यादा की कमाई की है।

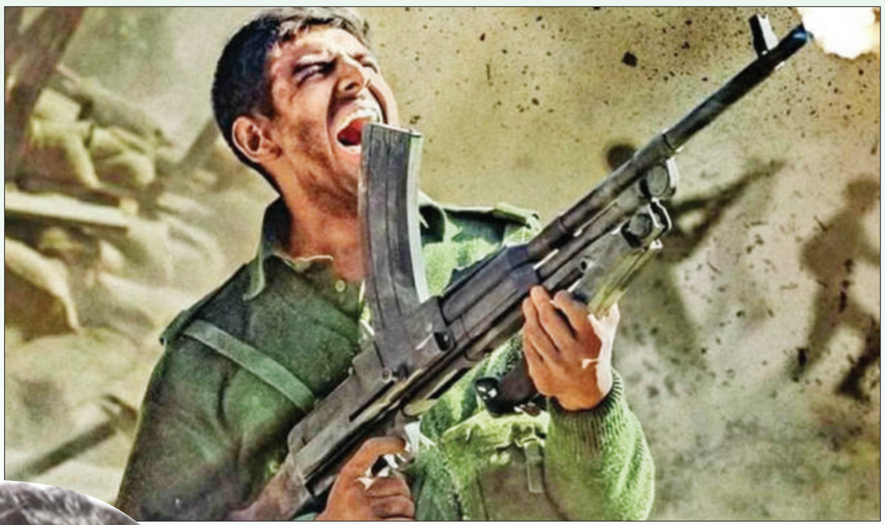

अक्षय कुमार की फ्लॉप फिल्मों ने निकाला प्रोड्यूसर का दिवाला

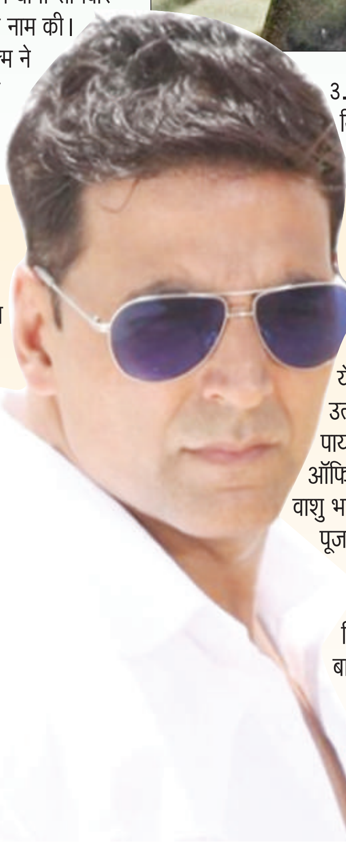

अक्षय कुमार का बॉक्स ऑफिस पर हाल बुरा है। उनकी कोई भी फिल्म कुछ कमाल नहीं दिखा पा रही है। हर फिल्म फ्लॉप ही साबित हो रही है जिसकी वजह से मेकर्स को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। अक्षय कुमार की बैक टू बैक फ्लॉप फिल्मों का जिसे सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है वो प्रोड्यूसर वाशु भगनानी हैं। वाशु भगनानी का प्रोडक्शन हाउस पूजा एंटरटेनमेंट लॉस में है। अक्षय कुमार की फिल्म बड़े मियां छोटे मियां भी वाशु भगनानी ने प्रोड्यूस की थी। उम्मीद थी कि ये फिल्म उनके सारे कर्जे उतार देगी मगर ऐसा नहीं हो पाया। ये फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हुई। वाशु भगनानी के प्रोडक्शन हाउस पूजा एंटरटेनमेंट ने बीवी नंबर 1, कुली नंबर 1 और हीरो नंबर 1 जैसी सुपरहिट फिल्में दी हैं। मगर कोविड के बाद मेकर्स को बहुत लॉस हुआ था। सबसे ज्यादा नुकसान वाशु भगनानी की टीम को हुआ। उन्होंने 150 करोड़ के बजट में बेल बॉटम बनाई थी जो बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई। ये फिल्म सिर्फ 26.50 करोड़ ही कमा पाई।

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक अक्षय कुमार की मिशन रानीगंज भी फ्लॉप साबित हुई थी। वहीं नेटफ्लिक्स से टाइगर श्रॉफ की गणपत के राइट्स खरीदने से भी मना कर दिया था। रिपोर्ट के मुताबिर पूजा एंटरटेनमेंट 250 करोड़ के कर्जे में था। जिसकी वजह से उन्हें अपना सात मंजिल का ऑफिस बेचना पड़ा था। रिपोर्ट के मुताबिक इस समय तक कंपनी की फाइनेंशियल सिचुएशन में पहले से ही खतरे के संकेत दिखने लगे थे और बड़े मियां छोटे मियां के हाई बजट ने इसे और भी बदतर बना दिया। फिर भी, फर्म को उम्मीद थी कि अक्षय कुमार और टाइगर श्रॉफ की ये फिल्म उनकी फाइनेंशियल कंडीशन को ठीक कर देगी।

बॉलीवुड | मन की बात

मेरे ऊपर लगे यौन शोषण के आरोप झूठे थे : नाना पाटेकर

नाना पाटेकर अपनी शानदार एक्टिंग के लिए जाने जाते हैं। लेकिन साल 2018 में नाना पाटेकर का नाम विवादों में घिरा था। दरअसल साल 2018 में तनुश्री दता ने एक्टर के ऊपर पर हैरसमेंट का आरोप लगया था। एक्ट्रेस तनुश्री दता के अनुसार हॉर्न ओके प्लीज गाने की शूटिंग के दौरान नाना ने उनके साथ बदसलूकी की थी। तनुश्री के इस आरोप ने साल 2018 में हंगामा मचा दिया था। 6 साल बाद एक्टर नाना पाटेकर ने चुप्पी तोड़ी है। नाना पाटेकर ने मीडिया हाउस में इंटरव्यू के दौरान अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ पर खुलकर बात की है। इंटरव्यू के दौरान नाना पाटेकर से तनुश्री दता द्वारा लगाए गए सेक्शुअल हैरसमेंट पर सवाल करते हुए पुछा कि जब एक्ट्रेस ने आरोप लगाए थे तो उन्हें गुस्सा नहीं आया, इस सवाल का जवाब देते हुए नाना ने बोला कि उन्हें शुरू से ही पता था कि उन्हे आरोप झूठे थे। इसी वजह से मुझे गुस्सा नहीं आया। एक्टर ने बोला- मुझे पता था कि यह सब झूठ था, इसलिए मुझे गुस्से नहीं आया। वो सब पुरानी बाते हैं सबको सच पता था। नाना ने इंटरव्यू में बताया है कि वह सोशल मीडिया को इग्नोर करते हैं। एक्टर ने बोला- मैं सोशल मीडिया की बातों पर कोई ध्यान नहीं देता हूं। कौन क्या लिख रहा है या क्या बोल रहा है। क्योंकि मैं इन सब को कंट्रोल नहीं कर सकता हूं। मैं किसी का मुंह बंद नहीं कर सकता हूं। इसलिए मैं सबको इग्नोर करता हूं। तनुश्री ने साल 2018 में भारत में MeToo की शुरुआत की थी, जब उन्होंने नाना पाटेकर, कोरियोग्राफर गणेश आचार्य और डायरेक्टर विवेक अग्निहोत्री पर फिल्म की शूट के दौरान गलत व्यवहार करने का आरोप लगाया था। एक्ट्रेस ने बताया है कि साल 2008 में फिल्म के गाने की शूटिंग के दौरान नाना ने उनका यौन शोषण करने की कोशिश की थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध में वीरान हो गया यह खूबसुरत बीच, जानवर भी नहीं टिक पाए यहां!

बीच और आइलैंड का नाम सुनते ही हममें से बहुत से लोगों के चेहरे पर चमक आ जाती है। आखिर किसे समुद्र का किनारा और दूर-दूर तक फैला हुआ पानी पसंद नहीं होगा। लोग ऐसी जगहों की तलाश में रहते हैं, जहां शांत और सुंदर समंदर के किनारे हो। एक ऐसा ही द्वीप है, जो खूबसूरत तो है लेकिन यहां कोई जा नहीं सकता। इसके पीछे की वजह भी काफी दिलचस्प है।

स्कॉटलैंड में एक ऐसा ही रिमोट आइलैंड है, जो बिल्कुल वीरान है। स्कॉटलैंड कोस्ट से एक किलोमीटर की दूरी पर मौजूद इस जगह को देखकर आप मोहित हो सकते हैं लेकिन यहां जा नहीं सकते। 1940 के दशक के बाद से यहां कभी कोई इंसान नहीं गया या फिर यू कहें कि टिक ही नहीं सका। चलिए जानते हैं इस अनोखे द्वीप की कहानी। इस द्वीप का नाम Gruinard है, जो Laide और llapool के पास मौजूद है। इस आइलैंड के शापित होने की कहानी द्वितीय विश्वयुद्ध से जुड़ी हुई है। उस दौरान ब्रिटिश राजनेता चर्चिल को आशंका थी कि जर्मनी कोई बायोकेमिकल वेपन बना रहा है। ऐसे में उन्होंने अपने वैज्ञानिकों को ऐसा ही एक वेपन बनाने के आदेश दिए, जिसे वक्त आने पर इस्तेमाल किया जा सके। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने एंथ्रॉक्स (anthrax) नाम का वेपन बनाया, जिसकी टेस्टिंग Gruinard आइलैंड पर हुई। यही वजह है कि यहां की मिट्टी में इस खतरनाक बीमारी के बैक्टीरिया समाए हुए हैं, जिसके संपर्क में आने से इंसान बीमार हो सकता है। साल 2007 में एक बार फिर से इस जगह समुद्री जीवों को विकसित किया जाने लगा लेकिन ये प्रयोग सफल नहीं रहा। हालांकि बाद में भेड़ों का एक झुंड यहां लाया गया, जो जिंदा भी रह गए। वो बात अलग है कि साल 2022 में एक बार फिर यहां भीषण आग लगी, ये आग इतनी भयानक थी कि इसे नरक की आग तक कहा गया। बाद में द्वीप के ओनर Gruinard Estate की ओर से कहा गया कि जंगल की आग आइलैंड के लिए फायदेमंद रही। इतने के बाद भी आइलैंड पर बसने वाला कोई नहीं है।

अजब-गजब | 1895 में बना था यह स्कॉटलैंड रका ओवरटाउन ब्रिज

इस पुल पर कुत्ते करते हैं आत्महत्या, आज तक नहीं पता चला इस रहस्य का सटीक कारण

आपने दुनिया के खतरनाक पुलों के बारे में सुना होगा लेकिन एक पुल किसी कोने से खतरनाक नहीं दिखता है। साधारण सा होने के बाद भी यह अपने आप में कम आकर्षक नहीं है। फिर भी स्कॉटलैंड रका ओवरटाउन ब्रिज, एक अजीब सी वजह के लिए मशहूर है। यहां कुत्ते आत्महत्या करते रहे हैं। और हैरानी की बात यह है कि इसका सटीक कारण पता नहीं है।

ओवरटाउन ब्रिज 1895 में बना था। 15 मीटर का गोथिक स्टाइल का यह पुल खुरदर एशलर के पत्थरों से बना है। इसमें तीन मेहराब हैं जो एक खड़ी घाटी को दो किनारों को जोड़ते हैं। एक बीच का मेहराब बड़ा है जिसके दोनों ओर दो निचले और छोटे मेहराब हैं। प्राकृतिक पेड़ पौधों के बीच यह बीच खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है। लेकिन इसकी चर्चा कुत्तों की वजह से अधिक होती है।

1859 में, ओवरटाउन फार्म को स्कॉटिश उद्योगपति जेम्स व्हाइट ने खरीदा। 1884 में व्हाइट की मौत के बाद उनके बेटे, जॉन कैंपबेल व्हाइट को घर और उसकी संपति विरासत में मिली और उन्होंने घर के ड्राइववे को एक गहरी खाई में विस्तारित करने की योजना पर काम शुरू कर दिया ताकि आसान पहुंच मिल सके। उन्होंने एक पुल का डिजाइन बनाने के लिए लैंडस्केप आर्किटेक्ट और सिविल इंजीनियर हेनरी मिलनर को काम पर रखा।

इस पुल के निर्माण के बाद से अब तक 600 से ज्यादा आत्महत्याओं का इतिहास रहा है। इससे भी ज्यादा डरावना यह है कि पिछले कई दशकों में 50 से ज्यादा कुते इस पुल से कूदकर अपनी जान दे चुके हैं, जिससे जानवरों की आत्महत्या की संभावना पर सवाल उठते हैं। इस बात का कोई सबूत नहीं मिले है कि पुल पर किसी अलौकिक शक्ति का वास या किसी भूत प्रेत का साया है, लेकिन ओवरटाउन की श्वेत महिला की किंवदंती अभी भी कायम है। लेकिन कुत्तों की आत्महत्या के पीछे एक कारण यह बताया जाता है कि पुल के आसपास के क्षेत्र में रहने वाले मिंक की गंध कुत्तों को कूदने के लिए आकर्षित करती है। लेकिन कुत्तों के यूं मरने का एक ही कारण नहीं बताया जाता है। एक अन्य सिद्धांत यह सुझाव देता है कि कुते किसी तरह की अदृश्य उपस्थिति से डर जाते हैं। यह कोई ऐसी ध्वनि या कंपन है जिसे इंसान नहीं समझ सकते। वहीं कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि पुल की रेलिंग के कारण कुत्ते अपनी छलांग का गलत अनुमान लगा लेते हैं, जिससे उनकी मौत हो जाती है। कई वैज्ञानिक अध्ययनों और जांचों के बावजूद, ओवरटाउन ब्रिज पर कुत्तों की आत्महत्या का कारण आज भी एक रहस्य बना हुआ है।

जल संकट : अनशन पर बैठीं आतिशी की तबियत बिगड़ी

» देर रात अस्पताल में कराया गया भर्ती

» संजय सिंह बोले- दिल्ली के लिए लड़ रहीं हैं आतिशी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में जल संकट को लेकर सियासत भी लगातार जारी है। तो वहीं दूसरी ओर दिल्ली सरकार की जल मंत्री आतिशी का संघर्ष भी जारी है। जल संकट को लेकर भूख हड़ताल कर रहीं आतिशी की अचानक तबियत बिगड़ गई। जिसके बाद आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह और अन्य पार्टी नेता-कार्यकर्ता आतिशी को देर रात लोक नायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल (एलएनजेपी) के डॉक्टरों के पास लेकर पहुंचे।

दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि रात से ही उनका (अतिशी) ब्लड शुगर लेवल गिर रहा था। जब हमने उनका ब्लड सैंपल दिया तो शुगर लेवल 46 निकला था। जब हमने पोर्टेबल मशीन से उनका शुगर लेवल चेक किया तो लेवल 36 निकला। डॉक्टर जांच कर रहे हैं और उसके बाद ही वे कोई सुझाव देंगे।

आतिशी का अनशन हुआ खत्म

आप सांसद संजय सिंह ने बताया तबियत बिगड़ने पर आतिशी को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद उनका अनशन फिलहाल समाप्त हो गया है। क्योंकि डाक्टर का कहना था अगर उन्हें तुरंत भर्ती नहीं कराया गया तो उन्हें जान का खतरा हो सकता है। संजय ने कहा अब हम लोग प्रधानमंत्री मोदी को पत्र लिखेंगे। इससे पहले आतिशी ने आरोप लगाते हुए कहा कि दिल्ली में अपना पानी नहीं है, यहां सारा पानी पड़ोसी राज्यों से आता है, लेकिन पिछले 3 हफ्ते से हरियाणा ने दिल्ली को पानी भेजना कम कर दिया है।

कीटोन बढ़ रहा, बीपी हो रहा कम : संजय सिंह

आप सांसद संजय सिंह ने कहा कि उनका ब्लड शुगर लेवल 43 तक तक पहुंच गया है। उनकी तबीयत बिगड़ गई है। डॉक्टरों ने कहा कि अगर उन्हें अस्तपाल में भर्ती नहीं कराया गया तो हालत और बिगड़ सकती है। आतिशी ने पिछले पांच दिनों से कुछ भी नहीं खाया है। उनका शुगर लेवल गिर गया है, कीटोन बढ़ रहा है और ब्लड प्रेशर कम हो रहा है। वह अपने लिए नहीं लड़ रही हैं, वह दिल्ली के लोगों के लिए, पानी के लिए लड़ रही हैं। आतिशी का चार दिन बाद 2.2 किलो वजन कम हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी है। सोमवार को लोकनायक अस्पताल के डॉक्टरों ने आतिशी के स्वास्थ्य की जांच की। जांच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि मंत्री का वजन कम हो रहा है। उनकी स्थिति खराब है और उन्हें अस्पताल में भर्ती होना चाहिए लेकिन मंत्री ने अनशन खत्म करने से मना कर दिया था।

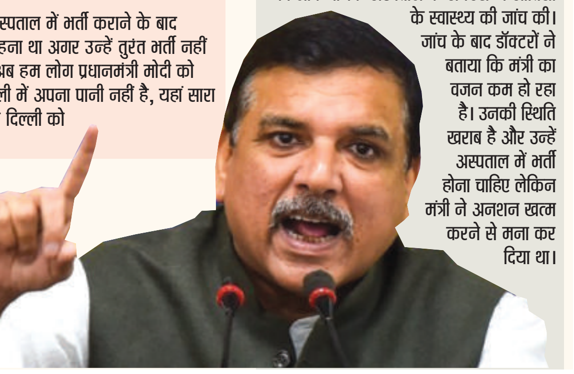

रानी दुर्गावती के नाम पर होगा जबलपुर हवाई अड्डा

» सीएम मोहन यादव ने किया ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जबलपुर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने एलान किया कि जबलपुर के हवाई अड्डे का नाम गोंडवाना की प्रसिद्ध रानी दुर्गावती के नाम पर रखा जाएगा। यादव ने रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम में यह बात कही। उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि जबलपुर हवाई अड्डे (जिसे वर्तमान में डुमना हवाई अड्डा कहा जाता है) का नाम रानी दुर्गावती के नाम पर रखने के लिए जल्द ही एक प्रस्ताव लाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि जबलपुर के मदन महल क्षेत्र में एक फ्लाईओवर का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर रखा जाएगा। यादव ने कहा कि रानी दुर्गावती के जीवन, उनकी वीरता और सुशासन को देश-दुनिया के सामने लाने के लिए संगोष्ठियां आयोजित की जाएंगी। उनके जीवन की गाथाओं को पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने याद दिलाया कि रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती के वर्ष में उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता दिखाने के लिए उनकी सरकार के मंत्रिमंडल की पहली बैठक जबलपुर में ही आयोजित की गई थी। यादव ने कहा कि देश में मुगल बादशाह अकबर का शासनकाल एक मुश्किल दौर था क्योंकि एक तरफ मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप उनसे लड़ रहे थे, तो दूसरी तरफ रानी दुर्गावती मुगलों के खिलाफ वन क्षेत्र में युद्ध कर रही थीं। मुख्यमंत्री ने अपने जबलपुर दौरे में रानी दुर्गावती और उनके पुत्र वीरनारायण की समाधि पर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

महाराष्ट्र में नई रणनीति बनाने में जुटी बीजेपी

» लोकसभा में मिली करारी हार के बाद जारी मंथन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भाजपा को लोकसभा चुनावों में महाराष्ट्र में भारी नुकसान उठाना पड़ा है। दो क्षेत्रीय पार्टियों को तोड़कर अपने साथ मिलाने के बाद भी बीजेपी को मनवांछित सफलता हाथ नहीं लगी। ऐसे में अब इसी साल होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए बीजेपी को एक नई रणनीति पर काम करना पड़ेगा, वर्ना उसके हाथ से महाराष्ट्र जाता हुआ दिखाई पड़ रहा है।

लोकसभा में मिली हार के बाद सबसे पहले बीजेपी गठबंधन के अंदर की कमियां दूर करना चाहती है। महायुति के अंदर ही शिवसेना और अजित पवार की अगुआई वाली एनसीपी में रार देखने को मिली है। वहीं बताया जा रहा है कि विधानसभा चुनाव में सीट बंटवारे को लेकर भी सहमति बनाना मुश्किल हो सकता है।

सभी लोकसभा क्षेत्रों का दौरा करेंगे बीजेपी नेता

महाराष्ट्र की कुल 48 लोकसभा सीटों को अब विधानसभा चुनाव के लिए टारगेट किया जाएगा। बीजेपी नेता सभी लोकसकभा क्षेत्रों का दौरा करेंगे और गरीबों के लिए रणनीति का प्रचार करेंगे। वहीं अगले महीने बीजेपी एक और बैठक करेगी जिसमें रणनीति की प्रगति पर चर्चा होगी। बीजेपी को भी पता है कि इस बार महाविकास अघाड़ी विधानसभा चुनाव में कड़ी चुनौती देने वाला है। राज्य में बीजेपी चीफ बावनकुले ने कहा कि संगठन और गठबंधन में जो भी समस्याएं थीं वे खत्म हो गई हैं। अब एक टीम की तरह विधानसभा चुनाव की तैयारियां होंगी।

केंद्र से केरल का नाम बदलने की मांग

» 'केरलम' नाम करने का विस में विजयन सरकार ने पारित किया प्रस्ताव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। केरल विधानसभा ने केंद्र सरकार से राज्य का नाम 'केरल' से बदलकर आधिकारिक तौर पर 'केरलम' करने का अनुरोध किया है। इसके लिए सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया है। राज्य विधानसभा ने दूसरी बार यह प्रस्ताव पारित किया है। इस से पहले केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पहले वाले प्रस्ताव की समीक्षा करने के बाद कुछ तकनीकी बदलाव करने का सुझाव दिया था।

मुख्यमंत्री पिनारायी विजयन ने विधानसभा में यह प्रस्ताव पेश किया। विजयन चाहते हैं कि केंद्र सरकार देश के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाओं में दक्षिणी राज्य का नाम केरल से बदलकर केरलम कर दे। यह दूसरी बार था जब राज्य विधानसभा ने राज्य के नाम में परिवर्तन की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। विधानसभा सचिवालय के सूत्रों ने बताया कि सदन ने पिछले साल अगस्त में भी सर्वसम्मति से इसी तरह का प्रस्ताव पारित कर केंद्र को भेजा था, लेकिन केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इसमें कुछ तकनीकी बदलावों का सुझाव दिया था। मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव पेश करने के बाद कहा कि पहले के प्रस्ताव में कुछ बदलाव की आवश्यकता है।

आजादी के समय से उठती रही है मांग : विजयन

मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि राज्य को मलयालम में केरलम कहा जाता है और मलयालम भाषी समुदायों के लिए एक केरल बनाने की मांग आजादी की लड़ाई के समय से ही तरीके से उठती रही है। विजयन ने कहा कि लेकिन संविधान की पहली अनुसूची में हमारे राज्य का नाम केरल लिखा हुआ है। यह विधानसभा, केंद्र सरकार से अनुरोध करती है कि संविधान के अनुच्छेद-3 के तहत इसे केरलम के रूप में संशोधित करने के लिए तत्काल कदम उठाए तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित सभी भाषाओं में इसका नाम बदलकर केरलम किया जाए।

इस प्रस्ताव को सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और विपक्षी कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) के सदस्यों ने भी स्वीकृति दी है। यूडीएफ विधायक एन शम्सुद्दीन ने प्रस्ताव के लिए कुछ संशोधनों का सुझाव दिया, जिन्हें बाद में सरकार ने अस्वीकार कर दिया। इसके बाद विधानसभा अध्यक्ष ए एन शमशीर ने इसे सर्वसम्मति से पारित घोषित कर दिया।

रोहित के तुफान में उड़े कंगारू

» सुपर-8 में ऑस्ट्रेलिया को भारत ने 24 रनों से दी मात

» रोहित ने 41 गेंदों में 92 रनों की खेली पारी

» भारत का सेमीफाइनल में होगा इंग्लैंड से मुकाबला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

ग्रॉस आइलेट। भारतीय टीम ने टी20 विश्वकप के सुपर-8 के अपने अंतिम मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को पटखनी देकर टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। साथ ही ऑस्ट्रेलिया को मात देकर भारत ने वनडे विश्वकप के फाइनल में मिली अपनी हार का बदला भी पूरा कर लिया। इस मुकाबले में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने अपनी आक्रामक पारी से कंगारुओं के छक्के छुड़ा दिए।

41 गेंदों पर 92 रनों की अपनी आतिशी पारी में रोहित ने 8 छक्के और 7 चौके जमाए, जिसकी बदौलत ने भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवरों में 5 विकेट पर 205 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम 7 विकेट गंवाकर 181 रन ही बना सकी और 24 रनों से हार का सामना करना पड़ा। भारतीय टीम अब अपना सेमीफाइनल मुकाबला 27 जून को खेलेगी। जहां उसकी टक्कर ग्रुप-2 में दूसरे नंबर पर रही इंग्लैंड टीम से होगी। यह सेमीफाइनल मुकाबला गुयाना के प्रोविडेंस स्टेडियम में भारतीय समयानुसार रात 8 बजे से खेला जाएगा। दूसरा सेमीफाइनल भी 27 जून को सुबह 6 बजे से होगा।

अफगान ने ऑस्ट्रेलिया को विश्वकप से किया बाहर

सेमीफाइनल में पहुंचा अफगानिस्तान

आईसीसी मेन्स टी20 वर्ल्ड कप 2024 में सुपर 8 स्टेज के आखिरी मुकाबले में अफगानिस्तान ने रोमांचक मुकाबले में बांग्लादेश को हराकर विश्वककप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। वहीं अफगानिस्तान के जीतते ही ऑस्ट्रेलिया टी20 विश्वकप से बाहर हो गई है। किंग्सटाउन के अर्नोस वेल ग्राउंड में खेले गए इस मुकाबले में अफगानिस्तान ने बांग्लादेश को 8 रनों से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना ली। अब 27 तारीख को अफगानिस्तान का सेमीफाइनल में मुकाबला साउथ अफ्रीका से त्रिनिदाद में होगा।

यूपी की 10 सीटें तय करेंगी सीएम योगी का सियासी भविष्य

लोकसभा चुनाव के बाद खाली हुईं सीटों पर होगा उपचुनाव

» इंडिया गठबंधन के तहत मिलकर लड़ेंगे सपा-कांग्रेस

» बीजेपी के लिए काफी अहम हैं ये उपचुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। ये सीटें विधायकों के लोकसभा चुनाव जीतने पर खाली हुई हैं। ऐसे में अब इन 10 सीटों पर होने वाले उपचुनाव को लेकर भाजपा और सपा के बीच कड़ी टक्कर होने की उम्मीद है। वहीं लोकसभा चुनाव में बीजेपी को मिली करारी हार के बाद उपचुनाव में सीएम योगी आदित्यनाथ की भी कड़ी परीक्षा होगी।

हालांकि, चुनाव आयोग ने अभी तक उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव का कार्यक्रम जारी नहीं किया है, जहां हाल के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस-समाजवादी पार्टी ने भाजपा को चौंका दिया था। आम चुनावों में भारी झटके के बाद, सत्तारूढ़ दल पर अपनी पकड़ फिर से हासिल करने का भारी दबाव है, जबकि विपक्ष विधानसभा चुनावों से पहले इस गति को जारी रखना चाहेगा। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने घोषणा की है कि वे इंडिया ब्लॉक के तहत चुनाव लड़ेंगे। बीजेपी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने भी अपनी तैयारी शुरू कर दी है। जहां सपा और कांग्रेस ने भरोसा जताया है कि वे अपनी जीत का सिलसिला जारी रखेंगे, वहीं बीजेपी भी अपनी विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए उपचुनाव में कुछ खास करने की तैयारी कर रही है। बीजेपी के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित ने कहा कि एनडीए पूरी ताकत के साथ विधानसभा उपचुनाव लड़ेगी।

10 में से 5 पर था सपा का कब्जा

सपा प्रमुख अखिलेश यादव सहित नौ विधानसभा सदस्यों के लोकसभा के लिए निर्वाचित होने के बाद सीटें खाली हो गई थीं, जबकि कानपुर के सीसामऊ से सपा विधायक इरफान सोलंकी को एक आपराधिक मामले में जेल की सजा सुनाए जाने के बाद अयोग्य घोषित कर दिया गया था। जो दस सीटें खाली हुई हैं, उनमें से पांच सीटें 2022 में समाजवादी पार्टी ने जीती थीं, जबकि एक सीट राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) को मिली थी, जो उस समय एसपी के साथ गठबंधन में थी। आरएलडी फिलहाल एनडीए का हिस्सा है। बीजेपी ने तीन सीटों पर जीत हासिल की थी और एक सीट उसकी सहयोगी पार्टी निषाद पार्टी को मिली थी।

अखिलेश यादव की सीट भी हुई खाली

समाजवादी पार्टी ने मिल्कीपुर (अयोध्या), करहल (मैनपुरी), कटेहरी (अंबेडकर नगर) और कुन्दरकी (मुरादाबाद) पर कब्ज़ा किया। अयोध्या लोकसभा सीट जीतकर बीजेपी को चौंका देने वाले अवधेश प्रसाद मिल्कीपुर से विधायक थे। करहल सीट सपा मुखिया अखिलेश यादव ने जीती थी। गाजियाबाद, फूलपुर और खैर विधानसभा सीट पर बीजेपी का कब्जा था। भगवा पार्टी के तीन विधायक लोकसभा चुनाव जीते हैं। भाजपा इन सीटों को बरकरार रखने के लिए हर संभव प्रयास करेगी और 2027 में अगले बड़े चुनावों से पहले अपने कैडर का मनोबल बढ़ाने के लिए कुछ और सीटों को जोड़ेगी, जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राजनीतिक भाग्य का फैसला किया जाएगा।

संविधान बचाने का नाटक कर रहे हैं सरकार और विपक्ष : मायावती

» बोलीं- दोनों आरक्षण को करना चाहते हैं खत्म, आपस में मिलकर कर रहे हैं काम

» राजनीतिक स्वार्थ के लिए संविधान से हो रहा खिलवाड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकसभा चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन के बाद बसपा प्रमुख मायावती एक्शन मोड में नजर आ रही हैं। इस दौरान उन्होंने संविधान बचाने के मुद्दे को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों पर निशाना साधा है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि सत्ता पक्ष और विपक्ष आपस में मिले हुए हैं। वो संविधान बचाने का नाटक कर रहे हैं। दोनों ही पक्षों में ज्यादातर लोग जातिवादी मानसिकता के हैं।

मायावती ने कहा कि ये लोग आरक्षण को खत्म कर देना चाहते हैं। उन्होंने सपा को निशाने पर लेते हुए कहा कि सपा सरकार ने यूपी में प्रमोशन में आरक्षण को खत्म किया था। ये लोग जाति जनगणना नहीं कराना चाहते हैं। मायावती ने कहा कि अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए ये दोनों (सत्ता पक्ष और विपक्ष) ही भारतीय संविधान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं ये कतई उचित नहीं है। इन दोनों ने अंदर-अंदर मिलकर संविधान में इतने संशोधन कर दिए है कि अब ये समतामूलक, धर्म निरपेक्ष नहीं बल्कि पूंजीवादी, जातीवादी और सांप्रदायिक संविधान बनकर रह गया। ये दोनों ही आरक्षण को समाप्त करना चाहते हैं और एससी, एसटी, आदिवासी को संविधान का लाभ नहीं देना चाहते हैं।

फोटो :4 पीएम

प्रदर्शन लखनऊ की सड़कों पर उतरी सपा छात्र विंग, सरकार के खिलाफ की जमकर नारेबाजी। धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की भी मांग।

नीट पेपर लीक मामले में सीबीआई को मिला हैंडओवर

» जांच में हुआ खुलासा- करीब 48 घंटे पहले लीक हुआ पेपर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार सरकार ने नीट-यूजी में अनियमितताओं के आरोपों की जांच सीबीआई को हैंडओवर कर दी है। सीबीआई सूत्रों के मुताबिक लोकल पुलिस की जांच में अभी तक कुछ महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई है। सीबीआई को जानकरी मिली है कि इस पूरे पेपर लीक कांड को एक संगठित तरीके से अंजाम दिया गया।

पेपर करीब 48 घंटे पहले लीक हुआ था। जिन केंडिडेट ने पैसा दिया था उन्हें एक रात पहले ही मुहैया करवाया गया था। इसी वजह है कि पेपर लीक पेन इंडिया नहीं हो पाया। आरोपी इतने शातिर थे कि उन्होंने कैंडिडेट्स को लीक प्रश्न पत्र का लिमिटेड एक्सेस दिया था।

14 साल पुराने मामले में अजय राय की बढ़ीं मुश्किलें

» गैंगस्टर एक्ट मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राहत देने से किया इंकार

» वाराणसी की MP-MLA स्पेशल कोर्ट में चल रहा केस का ट्रायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रहीं हैं। 2010 में वाराणसी में दर्ज गैंगस्टर एक्ट केस में सुप्रीम कोर्ट से उन्हें राहत नहीं मिली है। मंगलवार 25 जून को सुप्रीम कोर्ट ने इस पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। इसके साथ ही अदालत ने यूपी सरकार को नोटिस भी जारी किया है। इस मामले में अगली सुनवाई अब 15 जुलाई को होगी।

2010 में मारपीट और उपद्रव से जुड़े एक मामले में तत्कालीन मायावती सरकार ने अजय राय के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट की धारा लगवाई थी। हाईकोर्ट ने यह कह कर इस केस को रद्द करने से मना कर दिया था कि अजय राय पर 27 आपराधिक केस दर्ज हैं। हाई कोर्ट से राहत न मिलने के बाद वह सुप्रीम कोर्ट गए थे। बता दें कि इससे पहले इसी साल मई में अजय राय को इलाहाबाद हाईकोर्ट से भी झटका लगा था। हाईकोर्ट ने गैंगस्टर एक्ट के तहत दर्ज केस के खिलाफ दाखिल की गई अजय राय की याचिका को खारिज कर दिया था। हाईकोर्ट ने अजय राय के खिलाफ दर्ज 24 से ज्यादा क्रिमिनल सेस के आधार पर उन्हें कोई भी राहत देने से इनकार कर दिया था। इस मामले में वाराणसी की एमपी एमएलए स्पेशल कोर्ट में केस का ट्रायल चल रहा है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय की याचिका में ट्रायल कोर्ट में चल रही प्रोसिडिंग को रद्द करने की मांग की गई थी। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि याची के खिलाफ 27 मुकदमों का आपराधिक इतिहास है। कोर्ट ने कहा की ट्रायल कोर्ट में चल रही कार्यवाही को रद्द करने का कोई पुख्ता आधार नहीं है।

हाईकोर्ट ने भी नहीं दी थी राहत

पुलिस ने 2011 में दाखिल की थी चार्जशीट

अजय राय और चार अन्य के खिलाफ चौदह साल पहले वाराणसी के चेतगंज थाने में एफआईआर दर्ज हुई थी। वर्ष 2010 में आईपीसी की धारा 147, 148, 448, 511, 323,504, 506, 120 बी और सेक्शन 7 आफ क्रिमिनल लॉ अमेंडमेंट एक्ट, और सेक्शन 3(1) यूपी गैंगस्टर एक्ट एंड एंटी सोशल एक्टिविटीज प्रीवेंशन एक्ट में एफआईआर दर्ज हुई थी। इस मामले में जांच पूरी करने के बाद पुलिस ने 28 अक्टूबर 2011 को कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर दी थी।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।